॥ ३ - षोडषी महाविद्या स्तोत्र एवं कवचम् ॥

अनुक्रमाणिका

माँ षोडशी

माँ षोडशी यन्त्र

॥ माता षोडषी / ललिता त्रिपुर सुंदरी ॥

देवी षोडशी दसमहाविद्या में तीसरी महाविद्या हैं। त्रिपुर सुंदरी, षोडशी माहेश्वरी शक्ति की विग्रह वाली शक्ति है। कालिका पुराण के अनुसार देवी की चार भुजा और तीन नेत्र हैं। ये शान्तमुद्रा में लेटे हुए सदाशिवपर स्थित कमल के आसन पर आसीन हैं। इनके चारों हाथों में क्रमशः पाश, अंकुश, धनुष और बाण सुशोभित हैं। वर देने के लिये सदा-सर्वदा तत्पर है।

तन्त्रशास्त्रों में षोडशी देवी को पञ्चवक्त्र अर्थात् पाँच मुखों वाली बताया गया है। चारों दिशाओं में चार और एक ऊपर की ओर मुख होने से इन्हें पञ्चवक्त्रा कहा जाता है। देवी के पाँचों मुख तत्पुरुष, सद्योजात, वामदेव अघोर और ईशान शिव के पाँचों रूपों के प्रतीक हैं। पाँचों दिशाओं के रंग क्रमशः हरित, रक्त, धूम्र, नील और पीत होने से ये मुख भी उन्हीं रंगों के हैं। देवी के दस हाथों में क्रमश: अभय, टंक, शूल, वज्र, पाश, खड्ग, अङ्कुश, घण्टा, नाग और अग्नि हैं। इनमें षोडश कलाएँ पूर्णरूप से विकसित हैं, अतएव ये षोडशी कहलाती हैं।

एक बार पार्वती जी ने भगवान् शिवसे पूछा-भगवन्! आपके द्वारा प्रकाशित तन्त्रशास्त्र की साधना से जीव के आधि-व्याधि, शोक-संताप, दीनता-हीनता तो दूर हो जायँगे, किन्तु गर्भवास और मरण के असह्य दुःख की निवृत्ति तो इससे नहीं होगी। कृपा करके इस दुःख से निवृत्ति और मोक्षपद की प्राप्ति का कोई उपाय बताइये। पार्वती के अनुरोध पर भगवान् शंकरने षोडशी श्रीविद्या-साधना-प्रणाली को प्रकट किया।

भारतीय राज्य त्रिपुरा में स्थित त्रिपुर सुंदरी का शक्तिपीठ है माना जाता है कि यहां माता के धारण किए हुए वस्त्र गिरे थे। शक्तिपीठ भारतवर्ष के अज्ञात 108 एवं ज्ञात 51 पीठों में से एक है।

दक्षिणी-त्रिपुरा उदयपुर शहर से तीन किलोमीटर दूर, राधा किशोर ग्राम में राज-राजेश्वरी त्रिपुर सुंदरी का भव्य मंदिर स्थित है, जो उदयपुर शहर के दक्षिण-पश्चिम में पड़ता है। यहां सती के दक्षिण 'पाद' का निपात हुआ था। यहां की शक्ति त्रिपुर सुंदरी तथा शिव त्रिपुरेश हैं। इस पीठ स्थान को 'कूर्भपीठ' भी कहते हैं।

षोड्शी के प्रधान स्थान तीन हैं जो अपनी स्थिति के अनुसार एक तान्त्रिक त्रिकोण बनाते हैं। इनका स्थान कामगिरी, जालन्धर-पीठ तथा पूर्णागिरी है। इस भाँति से बनने वाले त्रिकोण के मध्य में उड्डीश हैं। हमारे देश में कामाक्षी (काँचीपुर), भ्रामरी (मलय), कुमारी (केरल) अम्बा (गुजरात), महालक्ष्मी (करवीर), कालिका (मालव) ललित (प्रयाग), विंध्यवासिनी, विशालाक्षी (काशी), मंगल चण्डी (गया), सुन्दरी (बंगाल) तथा गुह्यश्वरी (नेपाल) नामक सिद्ध-स्थल (देवी के प्रमुख बारह श्री विग्रह) भक्तों की इच्छायें पूर्ण कर रहे हैं।

भैरवयामल तथा शक्तिलहरी में इनकी उपासना का विस्तृत परिचय मिलता है। इनकी पूजा पद्धति में ललितोपाख्यान, ललिता सहस्रनाम, ललितात्रिशती का पाठ किया जाता है। दुर्गा का एक रूप ललिता के नाम से जाना गया है।

- मुख्य नाम **महा त्रिपुर सुंदरी।**
- अन्य नाम **श्री विद्या, श्री सुन्दरी, राजराजेश्वरी, ललित, षोडशी, कामेश्वरी, मीनाक्षी। महाविद्या समुदाय में त्रिपुरा नाम की अनेक देवियां हैं, जिनमें त्रिपुरा-भैरवी, त्रिपुरा और त्रिपुर सुंदरी विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।**
- ३ स्वरूप नाम माँ त्रिपुर-सुन्दरी की पूजा तीन स्वरूपों में होती है।

१. **बाल सुंदरी**	८ वर्षीया कन्या रूप में
२. **षोडशी त्रिपुर सुंदरी**	१६ वर्षीया सुंदरी
३. **ललिता त्रिपुर सुंदरी**	युवा स्वरूप

- भैरव **कामेश्वर**
- तिथि **मार्गशीर्ष पूर्णिमा।**
- विष्णु के अवतारों से सम्बद्ध **भगवान परशुराम।**
- कुल **श्री कुल** (इन्हीं के नाम से सम्बन्धित)।
- दिशा **नैऋत्य कोण।**
- स्वभाव **सौम्य।**
- तीर्थ स्थान या मंदिर **कामाख्या मन्दिर, ५१ शक्ति पीठों में सर्वश्रेष्ठ, योनि पीठ गुवहाटी, आसाम।**
- कार्य **सम्पूर्ण या सभी प्रकार के कामनाओं को पूर्ण करने वाली।**
- शारीरिक वर्ण **उगते हुए सूर्य के समान।**
- विशेषता **सिद्धविद्या, मोक्षदात्री।**

॥ त्रिपुर सुंदरी माता का मंत्र ॥

- नोट : त्रिपुर सुन्दरी महाविद्या साधना विधि आप बिना गुरु बनाये ना करें गुरु बनाकर व अपने गुरु से सलाह लेकर इस साधना को करना चाहिए। क्युकी बिना गुरु के की हुई साधना आपके जीवन में हानि ला सकती है।
- मंत्र **ऐं क्लीं सौः ।** मंत्र जप से शत्रुनाश होता है।
- मंत्र **ऐं सौः क्लीं ।**
- मंत्र **क्लीं एं सौः ।** इस मंत्र के जप से जगत का वशीकरण होता है।
- मंत्र **क्लीं सौः ऐं।** मुक्ति प्राप्ति के लिए इस मंत्र का जप अत्यंत उपयोगी है।
- मंत्र **ह्रीं क्लीं हसौः** सर्वसिद्धि के लिए।
- बीज मंत्र **ऐं ह्लीं श्रीं त्रिपुर सुन्दरीयै नमः ।** रूद्राक्ष माला से दस माला व्यक्तित्व विकास, स्वस्थ्य और सुन्दर काया के लिए।
- मंत्र **श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः**
- महा मंत्र **ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ ह्लीं श्रीं क ए ई ल ह्लीं ह स क ह ल ह्लीं सकल ह्रीं सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं नमः ।**
- मंत्र **ॐ ह्रीं कं ऐ ई ल ह्रीं ह स क ल ह्रीं स क ह ल ह्रीं।**

॥ त्रिपुर सुंदरी माता स्तुति ॥

उद्यद्भानुसहस्रकान्तिमरुणक्षौमां शिरोमालिकां रक्तालिप्तपयोधरां जपपटीं विद्यामभीतिं वरम् ।
हस्ताब्जैर्दधतीं त्रिनेत्रविलसद्वक्त्रारविन्दश्रियं देवीं बद्धहिमांशुरत्नमुकुटां वन्दे समन्दस्मिताम् ॥

॥ षोडषी (ललिता) ध्यान ॥

- विद्याक्ष मालासु कपाल-मुद्रा राजत् करां,
  कुन्द समान कान्तिम् ।
  मुक्ता फलालंकृति शोभितांगी,
  बालां स्मरेद् वाङ्गमय सिद्धि हेतोः ॥ ॥ १ ॥

- भजेत् कल्प वृक्षाध उद्दीप्त रत्नासने,
  सनिषण्णां मदाघूर्णिताक्षीम् ।
  करैंबीज पूरं कपालेषु चापं,
  स पाशांकुशां रक्त वर्णं दधानाम् ॥ ॥ २ ॥

- व्याख्यान मुद्रामृत कुम्भ विद्यामक्ष,
  स्रजं सन्दधतीं कराग्रैः ।
  चिद्रूपिणीं शारद चन्द्र कान्तिं,
  बालां स्मरेन्नौक्तिक भूषितांगीम् ॥ ॥ ३ ॥

- बालार्क मण्डलाभासां चतुर्बाहुं त्रिलोचनाम् ।
  पाशांकुशशरांश्चापं धारयन्ती शिवां भजे ॥ ॥ ४ ॥

॥ श्री षोडशी त्रिपुर सुन्दरी स्तोत्रम् ॥

त्रिपुरासुन्दरी दस महाविद्याओं (दस देवियों) में से एक हैं। इन्हें 'महा त्रिपुरसुन्दरी', षोडशी, ललिता, लीलावती, लीलामती, ललिताम्बिका, लीलेशी, लीलेश्वरी, तथा राजराजेश्वरी भी कहते हैं।

वे दस महाविद्याओं में सबसे प्रमुख देवी हैं। देवी भागवत में ये कहा गया है वर देने के लिए सदा-सर्वदा तत्पर भगवती मां का श्री विग्रह सौम्य और हृदय दया से पूर्ण है।

भैरवयामल और शक्तिलहरी में त्रिपुरसुन्दरी उपासना का विस्तृत वर्णन मिलता है। ऋषि दुर्वासा आपके परम आराधक थे। आदिगुर शंकरचार्य ने भी अपने ग्रन्थ सौन्दर्य लहरी में त्रिपुर सुन्दरी श्री विद्या की बड़ी सरस स्तुति की है। कहा जाता है- भगवती त्रिपुर सुन्दरी के आशीर्वाद से साधक को भोग और मोक्ष दोनों सहज उपलब्ध हो जाते हैं।

- **कदम्ब वन चारिणीं मुनि कदम्ब कादम्बिनीं,**
  नितम्ब जित भूधरां सुर नितम्बिनी सेविताम्।
  ननाम्बु रुह्लोचना मभि नवाम्बु दश्यामलां,
  त्रिलोचन कुटुम्बिनीं त्रिपुर संुदरी माश्रये॥ ॥ १ ॥

- **कदम्ब वन वासिनीं कनक वल्लकी धारिणीं,**
  महा मणि हारिणीं मुखसमुल्ल सद्वारुणींम्।
  दया विभव कारिणी विशद लोचनी चारिणी,
  त्रिलोचन कुटुम्बिनी त्रिपुर संुदरी माश्रये॥ ॥ २ ॥

- **कदम्ब वन शालया कुच भरोल्ल सन्मालया,**
  कुचोपमित शैलया गुरुकृपालस द्वेलया।
  मदारुण कपोलया मधुर गीत वाचालया,
  कयापि घन नीलया कवचिता वयं लीलया॥ ॥ ३ ॥

- **कदम्ब वन मध्यगां कनक मंडलो पस्थितां,**
  षडम्ब रुह वासिनीं सतत सिद्ध सौदामिनीम्।
  विडम्वित जपारुचिं विक चचंद्र चूडामणिं,
  त्रिलोचन कुटुम्बिनीं त्रिपुर-संुदरी माश्रये॥ ॥ ४ ॥

- **कुचांचित विपंचिकां कुटिल कुन्तला लंकृतां,**
  कुशेशय निवासिनीं कुटिलचित्त विद्वेषिणीम्।

मदारुण विलोचनां मनसिजारि सम्मोहिनीं,
मतंग मुनिकन्यकां मधुर भाषिणी माश्रये ॥ ॥ ५ ॥

- **स्मरेत्प्रथम पुष्पिणीं रुधिर बिन्दुनीलाम्बरां,**
  गृहीत मधुपत्रिकां मधु विघूर्ण नेत्रान्चलाम् ।
  घनस्तन भरोन्नतां गलित चूलिकां श्यामलां,
  त्रिलोचन कुटम्बिनीं त्रिपुर-सुंदरी माश्रये ॥ ॥ ६ ॥

- **सकुंकुम विलेपनां मलक चुम्बि कस्तूरिकां ,**
  समंद हसितेक्षणां सशरचाप पाशांकुशाम् ।
  असेष जनमोहिनी मरूण माल्य भुषाम्बरा,
  जपाकुशुम भाशुरां जपविधौ स्मराम्यम्बिकाम ॥ ॥ ७ ॥

- **पुरम्दर पुरंध्रिकां चिकुरबंध सैरंध्रिकां ,**
  पितामह पतिव्रतां पटुपटीर चर्चारताम् ।
  मुकुंद रमणीं मणि लसदलंक्रिया कारिणीं,
  भजामि भुवनांबिकां सुरवधूटिका चेटिकाम् ॥ ॥ ८ ॥

॥ इति श्रीमत् श्रीमच्छंकराचार्य विरचितं त्रिपुरसुन्दरी स्तोत्रम् संपूर्णम् ॥

॥ श्री षोडषी त्रिपुर-सुन्दरी प्रातः-स्मरण ॥

- ‘के’ स्तूरिका-कृत-मनोज्ञ-ललाम - भास्वदर्धेन्दु-
  मुग्ध - निटिलाञ्चल - नील – केशीम् ।
  प्रालम्बमान - नव - मौक्तिक - हार-भूषां,
  प्रातः स्मरामि ललितां कमलायताक्षीम् ॥ ॥ १ ॥

- 'ए' णाङ्क - चूड़ - समुपार्जित - पुण्य - राशिं,
  उत्तप्त-हेम-तनु-कान्ति-झरी-परीताम् ।
  एकाग्र-चित्त-मुनि-मानस-राज-हंसी,
  प्रातः स्मरामि ललितां परमेश्वरी ताम् ॥ ॥ २ ॥

- ‘ई' षद् – विकासि - नयनान्त - निरीक्षणेन,
  साम्राज्य-दान-चतुरां चतुराननेड्याम् ।
  ईषाङ्क-वास-रसिकां रस-सिद्धि-दात्रीं,
  प्रातः स्मरामि मनसा ललिताधि-नाथा ॥ ॥ ३ ॥

- 'ल'क्ष्मीश – पद्म - भवनादि - पदेश्वतुर्भिः,
  संशोभिते च फलकेन सदा-शिवेन ।
  मञ्चे वितान-सहिते स-सुखं निषण्णां,
  प्रातः स्मरामि मनसा ललिताधि-नाथां ॥ ॥ ४ ॥

- ‘ह्रीं’ कार - मन्त्र - जप - तर्पण - होम - तुष्टां,
  ह्रींकार-मन्त्र-जल-जात-सुराज-हंसीम् ।
  ह्रींकार-हेम-नव-पंजर-शारिकां तां,
  प्रातः स्मरामि मनसा ललिताधि-नाथाम् ॥ ॥ ५ ॥

- ‘ह’ल्लोस-लास्य-मृदु-गीत-रसं पिबन्ती-
  माकूणिताक्षमनवद्य-गुणाम्बु-राशिम् ।
  सुप्तोत्थितां श्रुति-मनोहर-कीर-वाग्भिः,
  प्रातः स्मरामि मनसा ललिताधि-नाथां ॥ ॥ ६ ॥

- ‘स’च्चिन्मयीं सकल-लोक-हितैषिणीं च,
  सम्पत्-करीं हय-मुखीं मुख-देवतेडयाम् ।
  सर्वांनवद्य - सुकुमार - शरीर - रम्यां,
  प्रातः स्मरामि मनसा ललिताधि-नाथाम् ॥ ॥ ७ ॥

- 'क' न्याभिरर्ध – शशि - मुग्ध - किरीट-
  भास्वच्चूडाभिरङ्क-गत-हृद्य-विपञ्चिकाभिः ।
  संस्तूय-मान-चरितां सरसरीरुहाक्षीं,
  प्रातः स्मरामि मनसा ललिताधि-नाथा ॥ ॥ ८ ॥

- 'ह'त्वाऽसुरेन्द्रमति - मात्र - बलावलिप्त-
  भण्डासुरं समर - चण्डमघोर - सैन्यम् ।
  संरक्षितार्त-जनतां तपनेन्दु-नेत्रां,
  प्रातः स्मरामि मनसा ललिताधि-नाथाम् ॥ ॥ ९ ॥

- 'ल'ज्जावनम्र - रमणीय - सुखेन्दु - बिम्बां,
  लाक्षारुणाघ्रि-सरसीरुह-शोभ-मानाम् ।
  रोलम्ब-जाल-सम-नील-सुकुन्तलाढ्यां,
  प्रातः स्मरामि मनसा ललिताधि-नाथोम् ॥ ॥१०॥

- 'ह्रीं' कारिणीं हिम-महीधर-पुण्य-राशिं,
  ह्रींकार-मन्त्र-महनीय-मनोज्ञ-रूपाम् ।
  ह्रींकार-गर्भमनु-साधक-सिद्धि-दात्रीं,
  प्रातः स्मरामि मनसा ललिताधि-नाथाम् ॥ ॥११॥

- 'स' ञ्जात - जन्म - मरणादि - भयेन देवीं,
  सम्फुल्ल-निलयां शरदिन्दु-शुभ्राम् ।
  अर्द्धेन्दु-चूड-वनितामणिमादि-वन्द्यां,
  प्रातः स्मरामि मनसा ललिताधि-नाथाम् ॥ ॥१२॥

- 'क' ल्याण-शैल-शिखरेषु विहार-शीलां,
  कामेश्वराङ्क-निलयां कमनीय-रूपाम् ।
  काद्यर्ण-मन्त्र-महानीय-महानुभावां,
  प्रातः स्मरामि मनसा ललिताधि-नाथाम् ॥ ॥१३॥

- 'ल' म्बोदरस्य जननीं तनु-रोम-राजिं,
  बिम्बाधरां च शरदिन्दु-मुखीं मृडानीम् ।
  लावण्य-पुर्ण-जलधिं जल-जात-हस्तां,
  प्रातः स्मरामि मनसा ललिताधि-नाथाम् ॥ ॥१४॥

- **‘ह्रीं’ कार-पूर्ण-निगमैः प्रतिपाद्य-मानां,**
  ह्रींकार-पद्म-निलयां हत-दानवेन्द्रम् ।
  ह्रींकार - गर्भमनुराज - निषेव्यमानां,
  प्रात: स्मरामि मनसा ललिताधि-नाथाम् ॥ ॥१५॥

- **‘श्री’ चक्र-राज-निलयां श्रित-काम-धेनु,**
  श्रीकाम-राज-जननीं शिव- भाग- धेयम् ।
  श्रीमद्-गुहस्य कुल मङ्गल-देवतां तां,
  प्रात: स्मरामि मनसा ललिताधि-नाथाम् ॥ ॥१६॥

॥ इति श्री त्रिपुर सुन्दरी प्रातः स्मरणं समाप्तम् ॥

॥ श्री ललिता प्रातः स्तोत्र-पञ्चकम् ॥

- प्रातः स्मरामि ललिता-वदना-रविन्दं,
  बिम्बाधरं पृथुल-मौक्तिक-शोभि- नासाम् ।
  आकर्ण-दीर्घ-नयनं मणि-कुण्डलाढ्यं,
  मन्द-स्मितं मृग-मदोज्ज्वल-भाल-देशम् ॥ ॥ १ ॥

- प्रातर्भजामि ललिता-भुज-कल्प-वल्लीं,
  रक्तांगुलीय - लसदंगुलि - पल्लवाढ्याम् ।
  माणिक्य - हेम -वलयाङ्गद - शोभ - मानां,
  पुण्ड्रेक्षु-चाप-कुसुमेषु सृणीदधानाम् ॥ ॥ २ ॥

- प्रातर्नमामि ललिता-चरणारविन्दं,
  भक्तेष्ट-दान-निरतं भव-सिन्धु-पोतम् ।
  पद्मासनादि - सुर - नायक - पूजनीयं,
  पद्मांकुश - ध्वज - सुदर्शन - लाञ्छनाढ्यम् ॥ ॥ ३ ॥

- प्रातः स्तुवे पर-शिवां ललितां भवानीं,
  त्रय्यन्त-वेद्य-विभवां करुणानवद्याम् ।
  विश्वस्य सृष्टि-विलय-स्थिति-हेतु-भूतां,
  विश्वेश्वरीं निगम-वाङ्-मनसादि - दूराम् ॥ ॥ ४ ॥

- प्रातर्वदामि ललिते ! तव पुण्य नाम,
  कामेश्वरीति कमलेति महेश्वरीति ।
  श्रीशाम्भवीति जगतां जननी परेति,
  वाग्-देवतेति वचसा त्रिपुरेश्वरीति ॥ ॥ ५ ॥

- **फल-श्रुति** यः श्लोक-पञ्चकमिदं ललिताम्बिकायाः,
  सौभाग्यदं सु-ललितं पठति प्रभाते ।
  तस्मै ददाति ललिता झटिति प्रसन्ना
  विद्यां श्रियं विमल-सौख्यमनन्त-कीर्तिम् ॥ ॥ ६ ॥

॥ इति मच्छंकराचार्य श्रीललिता पञ्चरत्नम् सम्पूर्णम् ॥

॥ श्री त्रिपुर-सुन्दरी प्रातः श्लोक-पंचकम् ॥

- प्रातर्नमामि जगतां जनन्याश्चरणाम्बुजं ।
  श्रीमत्-त्रिपुर-सुन्दर्या नमिता या हरादिभिः ॥ ॥ १ ॥

- प्रातस्त्रिपुर-सुन्दर्या नमामि पद-पङ्कजं ।
  हरि-हरो विरञ्चिश्च सृष्ट्यादीन् कुरुते यथा ॥ ॥ २ ॥

- प्रातस्त्रिपुर-सुन्दर्या नमामि चरणाम्बुजं ।
  यत्-पादमम्बु शिरसि भाति गङ्गा महेशितुः ॥ ॥ ३ ॥

- प्रातः पाशांकुश-शरान् चाप-हस्तां नमाम्यहं ।
  उदयादित्य-सङ्काशां श्रीमत्-त्रिपुर-सुन्दरीम् ॥ ॥ ४ ॥

- प्रातर्नमामि पादाब्जं ययेदं धार्यते जगत् ।
  तस्यास्त्रिपुर-सुन्दर्या यत्-प्रसादान्निवर्तते ॥ ॥ ५ ॥

- **फल-श्रुति** यः श्लोक-पञ्चकमिदं प्रातर्नित्यं पठेन्नरः ।
  तस्मै ददात्यात्म-पदं श्रीमत्-त्रिपुर-सुन्दरी ॥ ॥ ६ ॥

॥ श्री बाला त्रिपुर-सुन्दरी स्तोत्रम् ॥

- **श्री भैरव उवाच** — **अधुना देवि ! बालायाः स्तोत्रं वक्ष्यामि पार्वति ! ।
पञ्चमाङ्गं रहस्यं मे श्रुत्वा गोप्यं प्रयत्नतः ॥**

- **विनियोग** — ॐ अस्य श्रीबाला त्रिपुर-सुन्दरी स्तोत्र मन्त्रस्य । श्री दक्षिणामूर्तिः ऋषिः । पङ्क्तिश्छन्दः । श्री बाला त्रिपुर-सुन्दरी देवता । ऐं बीजं । सौः शक्तिः । क्लीं किलकं । श्री बाला प्रीतये पाठे विनियोगः ।

- **ऋष्यादि न्यास**

ॐ श्री दक्षिणामूर्ति ऋषये नमः – शिरसि ।
ॐ श्री पङ्क्तिश्छन्दसे नमः – मुखे ।
ॐ श्री बाला त्रिपुरसुन्दरी देवतायै नमः – हृदि ।
ॐ ऐं बीजाय नमः – नाभौ ।
ॐ सौः शक्तये नमः – गुह्ये ।
ॐ क्लीं कीलकाय नमः – पादयोः ।
ॐ श्री बाला प्रीतये पाठे विनियोगाय नमः – सर्वाङ्गे ।

- **करन्यासः**

ॐ ऐं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ।
ॐ क्लीं तर्जनीभ्यां नमः ।
ॐ सौः मध्यमाभ्यां नमः ।
ॐ ऐं अनामिकाभ्यां नमः ।
ॐ क्लीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।
ॐ सौः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

- **अङ्गन्यास**

ॐ ऐं हृदयाय नमः ।
ॐ क्लीं शिरसे स्वाहा ।
ॐ सौः शिखायै वौषट् ।
ॐ ऐं कवचाय हुम् ।
ॐ क्लीं नेत्रत्रयाय वौषतट् ।
ॐ सौः अस्त्राय फट् ।

- **ध्यानम्**

**अरुण-किरण-जालै रञ्जिताशावकाशा ।
विधृत-जप-वटीका पुस्तकाभीति हस्ता ।
इतर-कर-वराढ्या फुल्ल-कह्लार-संस्था ।
निवसतु हृदि बाला नित्य-कल्याण-रूपा ॥**

- **मानस पूजन**

ॐ लं पृथिवीतत्त्वात्मकं गन्धं श्रीबालात्रिपुराप्रीतये समर्पयामि नमः।
ॐ हं आकाशतत्त्वात्मकं पुष्पं श्रीबालात्रिपुराप्रीतये समर्पयामि नमः।
ॐ यं वायुतत्त्वात्मकं धूपं श्रीबालात्रिपुराप्रीतये घ्रापयामि नमः।
ॐ रं अग्नितत्त्वात्मकं दीपं श्रीबालात्रिपुराप्रीतये दर्शयामि नमः।
ॐ वं जलतत्त्वात्मकं नैवेद्यं श्रीबालात्रिपुराप्रीतये निवेदयामि नमः।
ॐ सं सर्वतत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीबालात्रिपुराप्रीतये समर्पयामि नमः।

- **बालास्तोत्रम्**

वाणीं जपेद् यस्त्रिपुरे ! भवान्या बीजं निशीथे जड-भाव-लीनः।
भवेत् स गीर्वाण-गुरोर्गरीयान् गिरीश-पत्नि प्रभुतादि तस्य॥ ॥ १ ॥

- कामेश्वरि ! त्र्यक्षरी काम-राजं जपेद् दिनान्ते तव मन्त्र-राजम्।
रम्भाऽपि जृम्भारि-सभां विहाय भूमौ भजेत् तं कुल-दीक्षितं च ॥ २ ॥

- तार्तीयकं बीजमिदं जपेद् यस्त्रैलोक्य-मातस्त्रिपुरे ! पुरस्तात्।
विधाय लीलां भुवने तथान्ते निरामयं ब्रह्म-पदं प्रयाति॥ ॥ ३ ॥

- धरा-सद्म-त्रिवृत्ताष्ट-पत्र-षट्कोण-नागरे।
विन्दु-पीठेऽर्चयेद् बालां योऽसौ प्रान्ते शिवो भवेत्॥ ॥ ४ ॥

- **फलश्रुति**

इति मन्त्र-मयं स्तवं पठेद् यस्त्रिपुराया निशि वा निशावसाने।
स भवेद् भुवि सार्वभौम-मौलिस्त्रिदिवे शक्र-समान-शौर्य-लक्ष्मीः ॥ ५ ॥

- इतीदं देवि ! बालाया स्तोत्रं मन्त्र-मयं परम्।
अदातव्यमभक्तेभ्यो गोपनीयं स्व-योनि-वत्॥ ॥ ६ ॥

॥ श्रीरुद्रयामले तन्त्रे भैरव-भैरवी संवादे श्री बाला त्रिपुर सुन्दरी स्तोत्रम् सम्पूर्णम्॥

॥ श्री ललिता त्रिपुर-सुन्दरी अपराध क्षमापन स्तोत्रम् ॥

त्रिपुरासुन्दरी दस महाविद्याओं में से एक हैं। इन्हें 'महात्रिपुरसुन्दरी', षोडशी, ललिता, लीलावती, लीलामती, ललिताम्बिका, लीलेशी, लीलेश्वरी, तथा राजराजेश्वरी भी कहते हैं। वे दस महाविद्याओं में सबसे प्रमुख देवी हैं। त्रिपुर सुंदरी धन, ऐश्वर्य, भोग और मोक्ष की अधिष्ठात्री देवी हैं।

- **कञ्जमनोहर पादचलन्मणि नूपुरहंस विराजिते**
  कञ्जभवादि सुरौघपरिष्टुत लोकविसृत्वर वैभवे।
  मञ्जुळवाङ्मय निर्जितकीर कुलेचलराज सुकन्यके,
  पालयहे ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिके॥ ॥ १ ॥

- **एणधरोज्वल फालतलोल्लस दैणमदाङ्क समन्विते,**
  शोणपराग विचित्रित कन्दुक सुन्दरसुस्तन शोभिते।
  नीलपयोधर कालसुकुन्तल निर्जितभृङ्ग कदम्बके,
  पालयहे ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिके॥ ॥ २ ॥

- **ईतिविनाशिनि भीति निवारिणि दानवहन्त्रि दयापरे,**
  शीतकराङ्कित रत्नविभूषित हेमकिरीट समन्विते।
  दीप्ततरायुध भण्डमहासुर गर्व निहन्त्रि पुराम्बिके,
  पालयहे ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिके॥ ॥ ३ ॥

- **लब्धवरेण जगत्रयमोहन दक्षलतान्त महेषुणा,**
  लब्धमनोहर सालविषण्ण सुदेहभुवापरि पूजिते।
  लङ्घितशासन दानव नाशन दक्षमहायुध राजिते,
  पालयहे ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिके॥ ॥ ४ ॥

- **ह्रीम्पद भूषित पञ्चदशाक्षर षोडशवर्ण सुदेवते,**
  ह्रीमतिहादि महामनुमन्दिर रत्नविनिर्मित दीपिके।
  हस्तिवरानन दर्शितयुद्ध समादर साहसतोषिते,
  पालयहे ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिके॥ ॥ ५ ॥

- **हस्तलसन्नव पुष्पसरेक्षु शरासन पाशमहाङ्कुशे,**
  हर्यजशम्भु महेश्वर पाद चतुष्टय मञ्च निवासिनि।
  हंसपदार्थ महेश्वरि योगि समूहसमादृत वैभवे,
  पालयहे ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिके॥ ॥ ६ ॥

- सर्वजगत्करणावन नाशन कर्त्रि कपालि मनोहरे,
  स्वच्छमृणाल मरालतुषार समानसुहार विभूषिते ।
  सज्जनचित्त विहारिणि शङ्करि दुर्जन नाशन तत्परे,
  पालयहे ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिके ॥ ॥ ७ ॥

- कञ्जदळाक्षि निरञ्जनि कुञ्जर गामिनि मञ्जुळ भाषिते,
  कुङ्कुमपङ्क विलेपन शोभित देहलते त्रिपुरेश्वरि ।
  दिव्यमतङ्ग सुताधृतराज्य भरे करुणारस वारिधे,
  पालयहे ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिके ॥ ॥ ८ ॥

- हल्लकचम्पक पङ्कजकेतक पुष्पसुगन्धित कुन्तले,
  हाटक भूधर शृङ्गविनिर्मित सुन्दर मन्दिरवासिनि ।
  हस्तिमुखाम्ब वराहमुखीधृत सैन्यभरे गिरिकन्यके,
  पालयहे ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिके ॥ ॥ ९ ॥

- लक्ष्मणसोदर सादर पूजित पादयुगे वरदेशिवे,
  लोहमयादि बहून्नत साल निषण्ण बुधेश्वर सम्युते ।
  लोलमदालस लोचन निर्जित नीलसरोज सुमालिके,
  पालयहे ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिके ॥ ॥१०॥

- ह्रीमितिमन्त्र महाजप सुस्थिर साधकमानस हंसिके,
  ह्रीम्पद शीतकरानन शोभित हेमलते वसुभास्वरे ।
  हार्दतमोगुण नाशिनि पाश विमोचनि मोक्षसुखप्रदे
  पालयहे ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिके ॥ ॥११॥

- सच्चिदभेद सुखामृतवर्षिणि तत्वमसीति सदादृते,
  सद्गुणशालिनि साधुसमर्चित पादयुगे परशाम्बवि ।
  सर्वजगत् परिपालन दीक्षित बाहुलतायुग शोभिते,
  पालयहे ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिके ॥ ॥ १२॥

- कम्बुगळे वर कुन्दरदे रस रञ्जितपाद सरोरुहे,
  काममहेश्वर कामिनि कोमल कोकिल भाषिणि भैरवि ।
  चिन्तितसर्व मनोहर पूरण कल्पलते करुणार्णवे
  पालयहे ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिके ॥ ॥ १३॥

- **लस्तकशोभि करोज्वल कङ्कणकान्ति सुदीपित दिङ्मुखे,**
  शस्ततर त्रिदशालय कार्य समादृत दिव्यतनुज्वले ।
  कश्चतुरोभुवि देविपुरेशि भवानि तवस्तवने भवेत्
  पालयहे ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिके ॥ **॥ १४॥**

- **ह्रीम्पदलाञ्चित मन्त्रपयोदधि मन्थनजात परामृते,**
  हव्यवहानिल भूयजमानक खेन्दु दिवाकर रूपिणि ।
  हर्यजरुद्र महेश्वर संस्तुत वैभवशालिनि सिद्धिदे
  पालयहे ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिके ॥ **॥ १५॥**

- **श्रीपुरवासिनि हस्तलसद्वर चामरवाक्कमलानुते,**
  श्रीगुहपूर्व भवार्जित पुण्यफले भवमत्तविलासिनि ।
  श्रीवशिनी विमलादि सदानत पादचलन्मणि नूपुरे
  पालयहे ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिके ॥ **॥ १६॥**

॥ इति श्री ललिता त्रिपुर-सुन्दरी अपराध क्षमापन स्तोत्रम् सम्पूर्णम् ॥

॥ त्रिपुर सुन्दरी कवचम् ॥

- **श्री भैरवी उवाच** — **देव देव महा-देव भक्तानां प्रीति वर्द्धन ।**
  सूचितं यत् त्वया देव्याः कवचं कथयस्व में ॥ ॥ १ ॥

- **श्री भैरव उवाच** — **श्रृणु देवि प्रवक्ष्यामि, कवचं देव-दुर्लभम् ।**
  अप्रकाश्यं परं गुह्यं, साधकाभीष्टं सिद्धिदम् ॥ ॥ २ ॥

- **विनियोग** — ॐ अस्य श्रीबाला त्रिपुर-सुन्दरी कवचस्य । श्री दक्षिणामूर्तिः ऋषिः । पङ्क्तिश्छन्दः । श्री बाला त्रिपुर-सुन्दरी देवता । ऐं बीजं । सौः शक्तिः । क्लीं किलकं । चतुर्वर्ग-साधने पाठे विनियोगः ।

- **ऋष्यादि न्यास**

ॐ श्री दक्षिणामूर्ति ऋषये नमः	–	शिरसि ।
ॐ श्री पङ्क्तिश्छन्दसे नमः	–	मुखे ।
ॐ श्री बाला त्रिपुरसुन्दरी देवतायै नमः	–	हृदि ।
ॐ ऐं बीजाय नमः	–	नाभौ ।
ॐ सौः शक्तये नमः	–	गुह्ये ।
ॐ क्लीं कीलकाय नमः	–	पादयोः ।
ॐ श्री चतुर्वर्ग साधने पाठे विनियोगाय नमः	–	सर्वाङ्गेषु ।

- **षडंगन्यासः**

	करन्यासः	अङ्गन्यास
ॐ ऐं	अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ।	हृदयाय नमः ।
ॐ क्लीं	तर्जनीभ्यां नमः ।	शिरसे स्वाहा ।
ॐ सौः	मध्यमाभ्यां नमः ।	शिखायै वौषट् ।
ॐ ऐं	अनामिकाभ्यां नमः ।	कवचाय हुम् ।
ॐ क्लीं	कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।	नेत्रत्रयाय वौषतट् ।
ॐ सौः	कर-तल-कर-पृष्ठाभ्यां नमः ।	अस्त्राय फट् ।

- **ध्यानम्** — **मुक्ता-शेखर - कुण्डलाङ्गद – मणि - ग्रैवेय - हारोर्मिका,**
  विद्योतद्-वलयादि-कङ्कण-कटि- सूत्रां स्फुरन् – नूपुराम् ।
  माणिक्योदर - बन्ध - कम्बु- कबरीमिन्दोः कलां विभ्रतीम्,
  पाशं चांकुश-पुस्तकाक्ष-वलय दक्षोर्ध्व - बाह्वादितः॥

- **मानस पूजन** — **ॐ लं पृथिवी-तत्त्वात्मकं गन्धं श्रीबाला-त्रिपुरा-प्रीतये समर्पयामि नमः ।**
  ॐ हं आकाश-तत्त्वात्मकं पुष्पं श्रीबाला-त्रिपुरा-प्रीतये समर्पयामि नमः ।
  ॐ यं वायु-तत्त्वात्मकं धूपं श्रीबाला- त्रिपुरा-प्रीतये घ्रापयामि नमः ।
  ॐ रं अग्नि-तत्त्वात्मकं दीपं श्रीबाला-त्रिपुरा-प्रीतये दर्शयामि नमः ।

ॐ वं जल-तत्त्वात्मकं नैवेद्यं श्रीबाला-त्रिपुरा-प्रीतये निवेदयामि नमः ।
ॐ सं सर्व-तत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीबाला-त्रिपुरा-प्रीतये समर्पयामि नमः ।

- **मूल कवच-पाठ**

"ऐ वाग्भवं पातु शीर्षं, क्लीं' कामस्तु तथा हृदि ।
सौः शक्ति-बीजं च पातु, नाभौ गुह्ये च पादयोः ॥ ॥ १ ॥

- ऐं क्लीं सौ' वदने पातु, बाला मां सर्व-सिद्धये ।
"हसकलह्रीं सौः पातु, भैरवी कण्ठ - देशतः ॥ ॥ २ ॥
- सुन्दरी नाभि - देशेऽव्याच्छीर्षिका सकला सदा ।
भ्रू - नासयोरन्तराले, महा - त्रिपुर - सुन्दरी ॥ ॥ ३ ॥
- ललाटे सुभगा पातु, भगा मां कण्ठ-देशतः ।
भगा देवी तु हृदये, उदरे भग - सर्पिणी ॥ ॥ ४ ॥
- भग-माला नाभि - देशे, लिङ्गे पातु मनोभवा ।
गुह्ये पातु महा - देवी, राज - राजेश्वरी शिवा ॥ ॥ ५ ॥
- चैतन्य - रूपिणी पातु, पादयोर्जगदम्बिका ।
नारायणी सर्व - गात्रे, सर्व - कार्ये शुभङ्करी ॥ ॥ ६ ॥
- ब्रह्माणी पातु मां पूर्वे, दक्षिणे वैष्णवी तथा ।
पश्चिमे पातु वाराही, उत्तरे तु महेश्वरी ॥ ॥ ७ ॥
- आग्नेय्यां पातु कौमारी, महा - लक्ष्मीश्च नैर्ऋते ।
वायव्यां पातु चामुण्डा, इन्द्राणी पातु चेशके ॥ ॥ ८ ॥
- जले पातु महा - माया, पृथिव्यां सर्व - मङ्गला ।
आकाशे पातु वरदा, सर्वतो भुवनेश्वरी ॥ ॥ ९ ॥

- **फल-श्रुति**

इदं तु कवचं नाम, देवानामपि दुर्लभम् ।
पठेत् प्रातः समुत्थाय, शुचिः प्रयत - मानसः ॥ ॥ १ ॥

- नाधयो व्याधयस्तस्य, न भयं च क्वचिद् भवेत् ।
न च मारी-भय तस्य, पातकानां भयं तथा ॥ ॥ २ ॥
- न दारिद्र्य-वशं गच्छेत्, तिष्ठेन्मृत्यु वशेन च ।
गच्छेच्छिव - पुरे देवि !, सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥ ॥ ३ ॥
- इदं कवचमज्ञात्वा, श्रीविद्यां यो जपेच्छिवे,
स नाप्नोति फल तस्य, प्राप्नुयाच्छस्त्र-घातनम् ॥ ॥ ४ ॥

॥ श्री रुद्रयामले तन्त्रे भैरवी-भैरव-संवादे श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी कवचम् सम्पूर्णम् ॥